Siha, rdhara [HerausgeberIn] [Editor]: Adbhuta carc
Lakhana, 1949 Seite 115

आज के बहुत पहले एस्किमो-जाति का नाम संसार से उठ गया होता।

१०—मनुष्यों का शत्रु चूहा

मनुष्य अपने को बहुत बड़ा शिकारी समझता है। जिस समय मनुष्य के पास अस्त्र-शस्त्र नहीं थे, उस समय भी वे जीविकोपार्जन के लिए पशुओं का शिकार किया करते थे। अब तो उनके पास नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र हो गए हैं वे जंगल के भयंकर जानवरों से भी नहीं डरते, और की तो बात क्या! सिंह, बाघ आदि जंगली जानवर मनुष्यों के इतने प्रिय शिकार हैं कि मैं समझता हूँ, कुछ दिनों में ये जानवर इस संसार से नेस्त-नाबूद हो जायँगे। मनुष्य की शारीरिक शक्ति तो इतनी ही है, किंतु वह अपने बुद्धि-बल से बड़े-बड़े मदमत्त हाथियों को भी वशीभूत कर लेता है। अपनी बुद्धि के ही प्रभाव से वह आज इस पृथ्वी पर अखंड राज्य कर रहा है। किंतु कहावत मशहूर है कि किसी के सब दिन बराबर नहीं जाते। कौन जानता है कि मनुष्य का आधिपत्य पृथ्वी पर भविष्य में भी आज-सा बना रहेगा। मनुष्यों के यों तो प्रायः सभी पशु, कीड़े आदि दुश्मन हैं; किंतु शायद उनमें सबसे बढ़ा-चढ़ा चूहा है। चूहा जंगली पशुओं-जैसा भयानक या हिम्मतवर तो नहीं होता; किंतु चालाक,

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/simha1949/0147
gefördert durch die DFG